धर्ममें राजसत्ता

रजि० नं० बी ४४४८

# हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक – प्यारेलाल

अंक ४५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १५ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

## तरक़्क़ीकी निशानी

श्री परीक्षितलाल मजमूदारने भाअी श्यामलालजीके नाम अेक दिल छूनेवाला खत लिखा है। वैसे अिस खतकी बातोंका ज़िक्र अेक दूसरे ज़रियेसे मिली खबरके मुताबिक़ मैं पहले गुजराती 'हरिजनबन्धु'में कर चुका हूँ। फिर भी भाअी श्यामलालजीकी तरफ़से आये श्री परीक्षितलाल मजमूदारके खतका कुछ हिस्सा, पुरानी बातके दोहराये जानेका खतरा अुठाकर भी, नीचे देता हूँ।

"मुझे आपको यह लिखते हुअे खुशी होती है कि आखिर भगवान्‌की दयासे रास्ता खुलने लगा है। मैं यह खत बारडोलीसे लिख रहा हूँ। मैं आपको यक़ीन दिला सकता हूँ कि अिस साल गांधी-जयन्तीके हफ़्तेमें हरिजनोंके लिअे क़रीब ४० कुअें खुले दिलसे खोले जा चुके हैं। ध्यान रहे कि अिसके लिअे किसी तरहका दबाव नहीं डाला गया था। लोगोंने अपनी राज़ी-खुशीसे यह काम अुठा लिया है। अैसे मौक़ों पर हमारे काम करनेवाले सभी जगह पहुँच नहीं पाये; मगर गाँववालोंने खुद ही हरिजनोंको तैयार किया और वे अुन्हें आम कुओं पर पानी भरनेके लिअे ले गये। मेरे पास अब तक अिसकी खबरें बराबर आ रही हैं। मैं खुद कुछ जलसोंमें शरीक हुआ हूँ, और यह चमत्कारी फेरफार मैंने अपनी आँखों देखा है। अिसके लिअे मैं भगवान्‌को धन्यवाद देता हूँ। अिसमें शक नहीं कि गांधीजीकी कोशिशों और हालके अुनके लेखोंकी वजहसे यह तब्दीली हुअी है। गाँवोंके नौजवानोंने आगे बढ़कर अिसमें मदद की है, बड़े-बूढ़े पीछे रहे हैं, लेकिन अुन्होंने या तो अिसके लिअे अपनी दुआयें दी हैं, या वे खामोश रहे हैं। अुनमेंसे किसीने विरोध नहीं किया। मैं आपको यह भी बता दूँ कि अिधर अिस तरफ़ कअी अन्तर्जातीय दावतें भी हुअी हैं। अैसी अेक बड़ी दावत नड़ियादमें हुअी थी। नड़ियाद खेड़ा ज़िलेकी सच्ची राजधानी है। क़रीब ४५० लोग, जिनमें २५० के क़रीब ऊँची जातके हिन्दू थे, अपने-अपने घरोंसे पका-पकाया खाना लाये और रामजी मन्दिरके आँगनमें बैठकर सबने भोजन किया। सन् १९२८में श्री ठक्कर बापाने यह मन्दिर भंगियोंके लिअे बनवाया था। अिस दावतमें २०० भंगी भी शरीक हुअे थे। बड़ा आनन्द रहा। चूँकि लोग अपने-अपने घरसे पका-पकाया खाना ले आये थे, अिसलिअे राशनका क़ानून नहीं टूटा। खेड़ा ज़िलेमें हरिजनों और सवर्णोंकी अितनी बड़ी दावत अिससे पहले कभी नहीं हुअी थी।

"कड़ी गाँवमें, जो कट्टरपन्थियोंका गढ़ है, अेक खास कुआँ खोला गया है, और बड़ौदा रियासतके पादरा गाँवमें १५० लोगोंने हरिजनोंके साथ बैठकर खाना खाया है। यहाँ अिस तरहके काम कअी जगह हो चुके हैं, लेकिन फ़िलहाल मैं अुन सबको गिना नहीं सकता।

"अिस बारेमें मैं गुजरातीमें बापाको अेक लम्बा खत लिखना चाहता हूँ, लेकिन वे अुसे पढ़ न सकेंगे। अगर मुमकिन हो, तो यह खत आप अुन्हें सुना दीजिये।"

हम जिस जगह पहुँचना चाहते हैं, अुसके मुक़ाबलेमें यह तरक़्क़ी बहुत ही मामूली चीज़ है। लेकिन जब यह ख़याल आता है कि अब तक गुजरात छुआछूत मिटानेके काममें पिछड़ा रहा है, तो जिस थोड़ी तरक़्क़ीका ज़िक्र श्री परीक्षितलालने क्षम्य सन्तोषके साथ किया है, अुससे खुशी होती है। शर्त यही है कि गुजरातके लिअे यह अेक स्थायी चीज़ बने, और अिससे भी अुम्दा काम वहाँ बराबर होते रहें। छुआछूतके कफ़नमें ठोकी गअी हरअेक कील हिन्दूधर्मको पवित्र बनानेके लिअे अुठाया गया सही क़दम है।

श्रीरामपुर, ३०–११–'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

## सवाल-जवाब

### सम्बोधनके प्रकारोंमें साम्प्रदायिकता

स०— कांग्रेसी सरकारोंने रेलवे स्टेशनों पर "हिन्दू पानी (या चाय)" और "अिस्लामी पानी (या चाय)"की पुकारोंका बन्द करानेकी जो कोशिशें की हैं, वे मुझे अच्छी मालूम होती हैं। लेकिन साथ ही, क्या हिन्दुओं और मुसलमानोंके लिअे सम्बोधनके अलग-अलग प्रकारोंके अिस्तेमालसे, मसलन्, हिन्दुओंके लिअे श्री, श्रीयुत या श्रीमान् और मुसलमानोंके लिअे जनाब-साहब लिखने या बोलनेसे अैसे ही फ़िरक़ेवाराना अलगावको बढ़ावा नहीं मिलता? यह ठीक है कि अिनका अिस्तेमाल सम्मान जतानेके लिअे किया जाता है। खुद गांधीजीने अिसकी शुरूआत की है, और आम तौर पर कांग्रेसी अिसका अनुसरण करते हैं। मगर मेरा अपना ख़याल यह है कि असलमें हम लोग, यानी जुदा-जुदा जातों और फ़िरक़ोंके लोग, अिस बातको पूरी तरह भूल नहीं पाते कि हम फलाँ जात या फ़िरक़ेके हैं। नतीजा यह होता है कि कहीं-न-कहीं हम अपने कामोंमें अपना असली रूप दिखाये बिना रह नहीं पाते। क्या आप अिस पर अपनी राय ज़ाहिर कीजियेगा?

ज०— यह अेक अच्छा सवाल है। मैं खुद तो जात-पाँत जतानेवाले सम्बोधनोंको पसन्द नहीं करता — वे मुझे जँचते ही नहीं।

लेकिन फ़िलहाल मुख़्तलिफ़ जातों और फ़िरक़ोंके बीच अविश्वासकी जो हवा फैली हुअी है, अुसका ख़याल करता हूँ, तो लगता है कि यह वक़्त किसी तरहका फेरफार सुझानेके लिअे अच्छा नहीं है। अैसा सुझाव किसी अेक जातके आदमीने किया है, यह हक़ीक़त ही, दूसरी जातवालोंके नज़दीक अुसे नामंज़ूर कर देनेके लिअे काफ़ी हो सकती है। बावजूद अिसके, अगर कोअी पाठक हिन्दुस्तानी ढंगके, सबको पसन्द आ सकनेवाले, सम्बोधनका कोअी सामान्य प्रकार सुझायेंगे, तो अुस पर ग़ौर किया जा सकेगा।

खुद मुझे अिस बातसे सन्तोष होगा कि मैं सभी मरदोंको "भाअी या भाअीजी अ, या भाअी अ जी, या भाअी अ साहब" और सभी औरतोंको "बाअी या बाअीजी अ, या बाअी अ जी, या बाअी अ साहब" कहूँ, फिर वे किसी भी जात या फ़िरक़ेके क्यों न हों। अिनमेंसे 'जी' और 'साहब'को बोलने या लिखनेवाले अपनी मरज़ीके मुताबिक़ चाहे लिखें, बोलें, चाहे न लिखें, न बोलें। लेकिन 'हरिजन' साप्ताहिकोंमें तो गांधीजीने जो तरीक़ा चलाया है, वही तब तक चलेगा, जब तक वे अुसकी जगह दूसरी कोअी बात नहीं सुझाते।

वापी, ७–१२–'४६

(अंग्रेज़ीसे)

किशोरलाल घ० मशरूवाला

www.vinoba.in

## छुआछूतकी जड़

सूरत जिलेमें आमतौर पर छुआछूतकी घिन कम है। फिर, आजकल तो अिस बुराअीको मिटानेके लिअे वहाँ खासी हलचल शुरू हुअी है। हरिजनोंके साथ बैठकर खाना खाने, ऊँची जात-वालोंके घरोंमें अुनकी आमद-रफ़्त बढ़ाने, ऊँची जातवालोंके कुओंसे अुन्हें पानी भरने देने, और खास मौक़ों पर मन्दिरोंमें दाखिल होने देनेकी कार्रवाअियाँ होती रहती हैं। फिर भी जब तक मनुष्य मनुष्यके बीचका भेदभाव दिलसे दूर नहीं होता, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि छुआछूत मिटने लगी है।

जलालपुर ताल्लुका समितिके सदर श्री लालभाअी नायककी अेक पत्रिकासे लिये गये नीचेके दो क़िस्से ग़ौर करने लायक़ हैं —

"कुछ दिन पहले अड़दा गाँवमें अेक हरिजन भाअी गाँवके बाहर अेक आम जगह पर बैठकर दातुन छील रहा था। अितनेमें अेक पाटीदार सज्जनका लड़का अुधरसे निकला। अुसने बात-बातमें अुस हरिजन भाअीको गाली दी। हरिजनने लड़केसे कहा कि वह गाली न दे। अिसपर अुसने दूसरी गाली दी। अिससे अुस हरिजन भाअीको गुस्सा आ गया और अुसने अुस लड़केको दो चपतें जमा दीं। लड़केने घर जाकर अपने बापसे शिकायत की। बाप अुस हरिजनको लेकर पटेलके घर गया। पटेलने हरिजनको लाठीसे पीटा, और अूपरसे गालियाँ देकर अुसकी तौहीन की।

"दूसरा वाक़या कछौली गाँवका है। कछौलीके अेक हरिजनके बाड़ेमें किसी अनाविल भाअीकी गाय घुसकर नुक़सान करती थी। हरिजनने गाय निकालकर भगा दी। लेकिन अुसकी घरवाली अपनी आदतके मुताबिक़, अनाविलको गाली देने लगी। अेक अनाविल नौजवान हरिजन बस्तीके पाससे जा रहा था। अुसने गाली सुनी और अुस बहनको गाली न देनेका हुक्म देने लगा। अिस पर अेक दूसरे हरिजनने अुस बहनका बचाव किया। नौजवानने हरिजनको देख लेनेकी धमकी दी और वह चल दिया।

"दूसरे दिन, जिस हरिजनका नुक़सान हुआ था, अुसे अुस अनाविल नौजवान और अुसके कुछ दोस्तोंने मिलकर गाँवके बाहर न सिर्फ़ धमकाया, बल्कि कहा यह जाता है, कि अुस पर हाथ भी चलाया। कुछ लोगोंने बीचमें पड़कर हरिजनको अनाविल नौजवानोंके हमलेसे छुड़ाया।

"अगले दिन गाँवके कुछ हरिजनोंने मार खानेवाले हरिजनके साथ अिन्साफ़ करनेके लिअे गाँवके चन्द अनाविल अगुओंसे प्रार्थना की। लेकिन गाँवके किसी आदमीने हरिजनोंकी मदद करनेकी मुस्तैदी नहीं दिखाअी। यही नहीं, बल्कि कुछ लोग तो हरिजनों पर गुस्सा होकर अुन्हें पीटनेकी तैयारी करते नज़र आये। अिस पर कुछ समझदार लोगोंने हरिजनोंको वहाँसे चले जानेकी सलाह दी, और अिस तरह झगड़ा होते-होते बचा।"

आम तौर पर यह माना जाता है कि सूरत जिलेके लोगोंमें मार-पीट करनेकी आदत कम है। लेकिन जब हरिजनोंकी बात आती है, तो अुनकी यह नरमी ग़ायब हो जाती है। जब हरिजन जैसी हलकी मानी जानेवाली जातके लोग अनाविल या पाटीदार जैसी ऊँची कहलानेवाली जातके लोगोंसे कोअी दलील करनेकी हिम्मत दिखाते हैं, या अुनके अन्यायपूर्ण बरतावकी तरफ़ अुनका ध्यान दिलानेकी कोशिश करते हैं, तो यह अुनसे बिलकुल सहा नहीं जाता; और वे यह महसूस भी नहीं करते कि हरिजनोंको गाली देनेमें या धौल-धप्पोंसे अुनकी पूजा करनेमें कोअी बुराअी है। हम यह सब मानो धर्मके नाम पर करते हैं। हिन्दूधर्म तो हमें यह सिखाता है कि मनुष्य किसी भी जात या धर्मका हो, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़ हो, कोअी भी धन्धा या पेशा करता हो — अगर वह पेशा समाजके लिअे अुपयोगी है, और अीमानदारीके साथ किया जाता है, तो — अिनसानके नाते न वह ऊँचा है, न नीचा है, क्योंकि सभी अिनसानोंमें अेक ही आत्मा रहती है, और सभी अिनसान अेक ही अीश्वरके अंश हैं। लेकिन अिस शानदार धर्मको बिगाड़कर हम जात-पाँतके और ऊँच-नीचके दायरे बनाकर बैठ गये हैं। अभी तक हम यह नहीं समझ पाये कि अिसकी वजहसे हमारा समाज कितना कमज़ोर और अपाहिज बन गया है, और बनता जाता है; या यों कहिये कि अब धीरे-धीरे हम अिस बारेमें कुछ समझने लगे हैं। अगर हम यह सोचकर बेफ़िक्र हो जायँगे कि अिस तरहकी समझदारी समाजमें हौले-हौले ही फैलेगी, तो हम अपनी हस्तीको ही ख़तरेमें डाल देंगे। अब हौले-हौले काम करनेकी रीत नहीं चलेगी। जितनी जल्दी हम छुआछूतकी अिस जड़को, ऊँच-नीचके अपने अिन ख़यालोंको, मिटायेंगे अुतनी ही अपनी ख़ैर समझिये।

अपनी जातकी अुच्चताका ग़रूर लेकर घूमनेवाले लोग यह तो समझ ही लें कि कैसी भी हलकी या नीच मानी जानेवाली जातके किसी भी आदमीको मारने, गाली देने या अुसकी तौहीन करनेका अुन्हें कोअी हक़ नहीं। अैसे लोग हिन्दू समाजका संगठन करनेकी बात करते सुने जाते हैं। अगर हिन्दू समाजका सच्चा संगठन करना है, तो वह दूसरी किसी जातके या धर्मके लोगोंके ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि अपने ही समाजमें घुसी हुअी बुराअियोंके ख़िलाफ़, अन्याय और अत्याचारकी वृत्तिके ख़िलाफ़, और डर व बुज़दिलीकी आदतके ख़िलाफ़ करना है। छुआछूतकी बुराअी अिन सब बुराअियोंमें सिरमौर है।

साबरमती, १०-१२-'४६ (गुजरातीसे) नरहरि परीख

## शास्त्रके सहारे हैवानियत!

जब अिनसान अपने अन्दर पाअी जानेवाली लड़ाअी, क़त्ल, दुश्मनी, ज़िनाकारी, चोरी, झुठाअी, जुल्म, शराब और गोश्तकी दावतें वग़ैरा देने और लोगोंको वैसा करनेकी प्रेरणा देनेवाली वृत्तियोंके समर्थनमें शास्त्र या शरीअतका सहारा लेता है, या अिन कामोंको धार्मिक विधियों या महान् नैतिक हेतुओंका जामा पहनाता है, तब धर्म या मज़हबके नामका अितना भद्दा अुपयोग होता है कि दमभरके लिअे दिल यह चाहने लगता है कि अिससे बेहतर तो यह था कि धर्म और नीति, मज़हब और अिख़लाक़के बारेमें कोअी किताबें ही न लिखी जातीं।

अच्छे-बुरे या मुनासिब-नामुनासिब बरतावका फ़ैसला करनेके लिअे भले-बुरेकी पहचान करनेवाली अपनी बुद्धिका अिस्तेमाल करनेके बदले जब अिनसान धर्मशास्त्र या शरीअतके पन्ने अुलटने बैठता है, तब अक्सर वह ग़लत रास्ता पकड़ लेता है, और दूसरोंको भी अुसी रास्ते ले जाता है। क्योंकि वह जानता है कि विवेक-बुद्धिकी कसौटी पर अुसका बरताव ठीक साबित नहीं किया जा सकता; मगर अुसे वैसा साबित तो करना है; चुनाँचे धार्मिक साहित्यमें अैसे कामोंके लिअे कोअी आधार मिल जाय, तो बेफ़िक्री हो।

अेक गम्भीर स्वभाववाले अभ्यासी भाअीके पूछे हुअे नीचे लिखे सवालोंने दिलमें अूपरके ख़याल पैदा किये —

१ "यह माना जाता है कि महाभारतकी लड़ाअी अेक धार्मिक लड़ाअी थी। फिर भी अिसमें कोअी शक नहीं कि वह रिश्तेदारोंकी आपस-आपसकी ही लड़ाअी थी। आजकल जिसे हम राष्ट्रोंका गृहयुद्ध या सिविलवॉर कहते हैं, वह अुसी ढंगकी लड़ाअी थी। क्या वैसी लड़ाअी धर्म-युद्ध मानी जा सकती है? तो फिर आजकलके हिन्दू-मुस्लिम या अैसे दूसरे दंगे भी धर्म-युद्ध क्यों न माने जायँ? अिनमें अल्पसंख्यक लोग जो अन्यायपूर्ण माँगें पेश करते हैं, वे कैसे मंज़ूर की जायँ? अिनके ख़िलाफ़ धर्म-युद्ध ही होना चाहिये या नहीं?

२. क्या श्रीकृष्णने भी धर्मकी विजयके लिअे, आन-बानके मौक़े पर, हथियार न अुठानेकी अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर रथचक्र (सुदर्शन) नहीं सँभाला था? आज अिस आन-बानके मौक़े पर पूज्य महात्माजी रथचक्र जितनी हिंसा क्यों नहीं करने देते?"

जब तक हम अपने सामने पेश मसले पर, अपनी विवेक-बुद्धिका अिस्तेमाल करके, ग़ौर नहीं कर लेते, तब तक धर्मशास्त्र या अितिहासका सहारा खोजनेका मौक़ा ही पैदा नहीं होता। यह आदत ही बुरी है।

अखण्ड हिन्दुस्तान या पाकिस्तानके सियासी मसलेको अेक ओर रखकर सिर्फ़ मानव-हित और मानव-धर्मकी, साधारण विवेक-बुद्धिसे

www.vinoba.in

और सात्विक दृष्टिकोणसे, छान-बीन कीजिये। कलकत्तेमें; पूरबी बंगालमें और बिहारमें जो जबरदस्त मार-काट, लूट-पाट, आग और तरह-तरहके जुल्म हुअे, और दूसरे सूबोंमें छोटे-मोटे दंगोंसे लेकर छुरी भोंकने तककी जो वारदातें हो रही हैं, क्या अुनमें अिनसानियत है? क्या अुन्हें जारी रखना या बढ़ावा देना मुनासिब है? क्या आपकी विवेक-बुद्धि शैतानियतके अिस तमाशेको वाजिब ठहराती है? क्या आपका सात्विक हृदय अिसे पसन्द करता है? आपमें यह पागलपन कैसे और कहाँसे आ गया कि अगर आप हिन्दू हैं, तो मुसलमानोंको, या मुसलमान हैं, तो हिन्दुओंको देखते ही, मच्छरों पर डी० डी० टी० के फव्वारेकी तरह, अुनपर क़त्ल, आग और दूसरे अैसे-अैसे जुल्म ढानेको तैयार हो जाते हैं, जिनका बयान नहीं किया जा सकता; और अपनी अिस तैयारीको ठीक साबित करनेके लिअे पुराण और क़ुरानका सहारा खोजते हैं? नोआखालीके देहातमें रहनेवाले बेचारे अध-भूखे किसान और नामशूद्र, या बिहारके गाँवोंमें रहनेवाले मुसलमान किसान या मजदूर, या कोलाबा जिलेके मछुअे और अुनके बालबच्चे क्या जानें कि अखण्ड हिन्दुस्तान या पाकिस्तान क्या बला है, और अिनका अुनके अपने जीने-मरनेके साथ क्या ताल्लुक़ है? अिनके लिअे बेचारे अिन लोगोंको क्यों मारा, काटा और सताया जाय? अपने किसी कामके सिलसिलेमें सड़कसे जानेवाले हिन्दू या मुसलमानने किसीका क्या बिगाड़ा है कि छुक-छिप कर अुसे छुरी भोंक देनेकी काली करतूतके लिअे आपके दिलमें हमदर्दी पैदा हो सकती है?

सच है कि अिनसानके दिलमें लड़ाअीकी प्यास अभी तक बुझी नहीं है! यही वजह है कि कहीं-न-कहीं छोटी-बड़ी लड़ाअियाँ पैदा हो ही जाती हैं। मुट्ठीभर लोगोंकी शैतानियतभरी महत्त्वाकांक्षा अिन लड़ाअियोंको अुकसाती और लाखों बेगुनाह लोगोंको अुनमें फँसाती है। वह अरबों रुपयोंकी दौलत बरबाद करवाती और कअी अरब लोगोंको हैरान-परेशान करती है। ये लोग भोलेभाले लोगोंको अपने जालमें फँसानेके लिअे तरह-तरहकी तरकीबोंसे काम लेते हैं। धर्म या मजहबकी हिफ़ाजतकी पुकार अैसी ही अेक तरकीब है। अिसके नामपर वे अिनसानोंको अितने अविचारी और जुनूनी बना देते हैं कि अुनके सामने शेर, चीता, भेड़िया, और पागल हाथी कोअी चीज नहीं रह जाते। अगर लोगोंसे यह कहा जाय कि तुम हैवान हो, अिसलिअे हैवानियतभरे काम करो, तो बहुत थोड़े लोग अुसके लिअे तैयार होंगे। लेकिन अुन्हें तो यह समझाया जाता है कि यह हैवानियत धर्म है, भगवान्ने और शास्त्रोंने अिसे फ़रमाया है, यह महान् यज्ञ है, भगवान्की कृपा पानेका यह अेक तरीक़ा है, तुम जिन्हें मारते हो या जिनपर जबरदस्ती करते हो, अुनका भी अिसमें भला है, या यह कि अगर तुम अुनकी मुख़ालिफ़त न करोगे, तो तुम्हारे धर्म और तुम्हारी तहज़ीबका नाम-निशान न रहेगा। शराब और ताड़ीसे भी बदतर, मजहबकी यह शराब, लोगोंको अिस तरह पिलाअी जाती है।

अिन दंगों और पाण्डव-कौरवकी लड़ाअीके बीच कोअी मुक़ाबला हो ही नहीं सकता। वह लड़ाअी दो राज-परिवारोंके बीच हक़दावेकी लड़ाअी थी। और लड़ाअीका अैलान करनेके लिअे अुस जमानेमें जो रिवाज रायज था, अुसके मुताबिक़ सारी कार्रवाअी करनेके बाद दोनों दलोंने अपनी-अपनी फ़ौजें खुले मैदानमें अिकट्ठा कीं, और दोनों वहाँ खुलकर लड़े। अुस जमानेके युद्ध-सम्बन्धी नियमोंका बहुत-कुछ पालन करके ही वह लड़ाअी लड़ी गअी थी। अुसमें सैनिकों या फ़ौजियों के सिवा और किसीको छुआ तक नहीं गया था। फ़ौजियों पर हमला करनेके नियम बने हुअे थे। जब दो दलोंमेंसे किसी अेकने भी अुन नियमोंको तोड़ा, तो अुसके अपने दलकी तरफ़से भी अुसकी बुराअी ही की गअी। अिस तरह वह लड़ाअी तो थी, मगर चूँकि अुसमें लड़ाअीके कुछ नीति-नियमोंका पालन करना जरूरी था, अिसलिअे अुसे धर्म-युद्ध या धर्मकी लड़ाअी कहनेका रिवाज था।

आजकलके दंगोंमें अैसी कोअी बात नहीं होती। अिनमें तो अेक जातकी बड़ीसी भीड़ दूसरी जातके कुछ लोगोंपर या अिक्के-दुक्के आदमीपर अचानक हमला करती है, और बिलकुल बेगुनाहोंको भी मौतके घाट अुतार देती है। न हमला करनेवालोंमें कोअी बहादुर लड़वैया होता है, और न हमले के शिकार लोगोंमें कोअी मुजरिम-गुनहगार ही। जो लोग परदेकी आड़में रहकर अिन दंगोंको चलाते हैं, अिनका सूत्र-संचालन करते हैं, वे कोअी सिपहसालार या सेनापति नहीं होते, बल्कि अपने-आपको बचाकर और छिपाकर पैसेके बल काम करनेवाले हृदयशून्य मानवशत्रु होते हैं। मुमकिन है, अुनमेंसे कुछ लीडर या अगुआ भी माने जाते हों; मगर असलमें वे आमलोगोंके ख़ैरख़्वाह नहीं, बल्कि कसाअी हैं, जो अपनी कोअी ख़्वाहिश पूरी करनेके लिअे लोगोंको मरवाते हैं। उन्हें धर्मसे कोअी मतलब नहीं। और जिन्हें वे अुकसाते या ख़ून करनेको ललचाते हैं, वे तो जानते तक नहीं कि धर्म या अधर्म किस चिड़ियाका नाम है। अगर अिन दंगोंकी तुलना पुराने जमानेकी किसी घटनासे करनी ही हो, तो महाभारतकी लड़ाअीके ख़तम होनेपर अश्वत्थामा और कृपाचार्यने रात पाण्डवोंकी छावनीमें जाकर जिस तरीक़ेसे अुसमें आग लगाअी और जिस कमीने ढंगसे सैनिकोंकी हत्या की, अुसके साथ की जा सकती है। द्वारकाकी यादवीको भी अिस मौक़े पर कुछ-कुछ याद किया जा सकता है।

लेखकने दूसरी मिसाल श्रीकृष्णके प्रतिज्ञा तोड़कर सुदर्शन सँभालनेकी दी है। लेखक पूछते हैं कि जब श्रीकृष्णने अैसा किया था, तो गांधीजी भी वैसा ही क्यों नहीं करते? और चूँकि गांधीजी सुदर्शन चलाना नहीं जानते, अिसलिअे वे दूसरोंको अुसे चलानेकी अिजाजत दें! अिसका जवाब सामनेसे दूसरा सवाल पूछकर दिया जा सकता है। गांधीजीने बचपनमें अपने पितासे छिपाकर चोरी की थी और बीड़ियाँ पी थीं। अगर आपका लड़का आपसे पूछे कि महात्मा गांधी जैसोंने भी अैसा किया था, तो मेरे वैसा करनेमें आपको क्या अेतराज हो सकता है? अुलटे, मैं कोअी महात्मा बननेवाला नहीं; चुनाँचे मेरे लिअे तो अिसमें कोअी बुराअी ही न समझी जानी चाहिये! तो क्या यह जवाब काम देगा? अगर श्रीकृष्णके प्रतिज्ञा तोड़नेकी बात सच हो, तो वह अुनकी ख़ामी ही मानी जायगी। और चूँकि बात कुछ अैसी ही हो रही थी, अिसी-लिअे भीष्मने अुन्हें शरमिन्दा किया और अर्जुनने रोका था। याद रहे कि बड़े लोगोंके अच्छे कामोंकी ही नक़ल की जा सकती है; अुनकी कमजोरियों या ख़ामियोंकी नहीं।

जितनी जल्दी हम अिस साम्प्रदायिक विषरूपी महामारीसे बच निकलेंगे, अुतना ही हमारे देशका भला होगा। प्लेग, टाअिफ़ॉअिड, हैजा, चेचक वग़ैरा महामारियोंसे भी यह ज़्यादा डरावनी चीज है। जब कोअी बीमारी या महामारी शुरू होती है, तो हम यह नहीं सोचते कि चूँकि बंगालमें हैजा शुरू हो गया है, अिसलिअे अुसका बदला लेनेके ख़यालसे हम अुसे बिहारमें भी शुरू कर दें। बल्कि हम तो यही सोचते हैं कि किन तरीक़ोंसे वह दूसरी जगह फैलनेसे रुकेगा। भलेचंगे आदमीको अुसकी छूतसे बचानेके लिअे हम तरह-तरहके अिंजेक्शनोंका पता लगाते हैं, अुबाला हुआ पानी पीते हैं, जन्तुनाशक चीजें छिड़कते हैं, और रोगके शिकार बने आदमीको दूसरोंसे अलग रखते हैं।

क्या फ़िरक़ेवाराना दुश्मनीके जहरका कोअी अैसा अिलाज हो सकता है कि अगर वह बंगालमें फैला है, तो अुसे बिहार, यू० पी०, बम्बअी वग़ैरा सूबोंमें फैलाया जाय और माना जाय कि अिस तरह मुल्क तन्दुरुस्त हो जायगा? जब अिनसान भले-बुरेकी तमीजका ख़याल छोड़ देता है, तभी अुसे यह अुलटी नीम हकीमी सूझती है।

वापी, ३-१२-'४६ **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

# हरिजनसेवक

१५ दिसम्बर १९४६


## धर्ममें राजसत्ता

जब-जब किसी धर्मके अुत्साही आचार्यके दिलमें राजकाजी हुकूमत हासिल करके अुसकी मददसे अपने सम्प्रदायका प्रचार करनेका लोभ पैदा हुआ है, तब-तब अुसके पीछे खून-खराबी और अमानुषी अत्याचार भी आये हैं। पुराने जमानेमें जब राज्यकी सारी हुकूमत राजाके ही हाथमें रहती थी, तब आसान तरीक़ा यह था कि राजाको अपना चेला बनाकर अुसकी मारफ़त अुस धर्मको राज्यका धर्म घोषित कर दिया जाय। अिसके साथ अक्सर जो अुस धर्मको मान लेते, अुन्हें कुछ फ़ायदे मिलते, और जो अुसे माननेसे अिनकार करते, अुन्हें कुछ सज़ायें दी जातीं। सज़ाओंमें किसी खास करसे लेकर, अिनकार करनेवालोंका बायकाट करना, अुन्हें क़ैद करना, अुनके हाथ-पैर वग़ैरा काटना, अुन्हें सता-सताकर मारना, अुनकी जमीन-जायदाद ज़ब्त करना, अुन्हें देशनिकाला देना, औरतों और कमज़ोरोंको ज़बरदस्ती अपने मज़हबमें शामिल कर लेना, और पिशाचवृत्तिके दूसरे जो तरीक़े खोजे जा सकें, अुन तरीक़ोंको आज़माना, वग़ैरा बातें शामिल थीं। आग और तलवारकी ताक़तसे दूसरे देशोंमें भी अपने पंथका प्रचार करनेकी कोशिश की जाती थी।

बुद्धचरित्रमें देवदत्तका क़िस्सा मशहूर है। असलमें वह बुद्धका चेला था। लेकिन किसी वजहसे बुद्धके साथ अुसका झगड़ा हो गया, और अुसने अपना अलग पन्थ चलाने और बुद्धके पन्थको मिटाने का फ़ैसला किया। अिसके लिअे अुसे मगधके राजपुत्र अजातशत्रुको अपने हाथमें लेनेकी बात सूझी। अुसने अजातशत्रु पर अपना असर डालकर अुससे कहा—"जीवन क्षणभंगुर है। मौत कब आ जायगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। पहले तू मरेगा या राजा मरेगा, सो कौन जानता है? तुझे धर्मके कअी काम करने हैं। राजाके मरने तक राह देखना तेरे लिअे ठीक नहीं।" अिस तरह अुसे फुला-फुलाकर आखिर अुसने अजातशत्रुको अिस बातके लिअे अुभारा कि वह पिताको क़ैद करके .खुद गादी पर बैठ जाय। जब यह काम हो गया, तो नये राजाकी मददसे अुसने बुद्धको और अुसके चेलोंको सताना शुरू किया, और .खुद बुद्धकी जान लेनेके लिअे कअी साज़िशें कीं।

प्रह्लादकी कहानी भी धर्मके लिअे दी गअी अैसी तकलीफ़ोंका अेक लम्बा बयान है। पुराणोंमें कवियोंने अुसे अिस तरह पेश किया है, मानो सब .जुल्म अेक ही आदमी पर किये गये हों। असलमें वह अेक सम्प्रदायके राजा द्वारा दूसरे सम्प्रदायको माननेवाले लोगों पर किये गअे .जुल्मोंका बयान है। अुसमें यह दिखाया गया है कि धर्म-मतको न बदलनेके अपराधके लिअे धर्मान्ध राजा कैसे-कैसे जुल्म कर सकता है।

समूची दुनियाके किसी भी खास या बड़े सम्प्रदायके अितिहासको देखनेसे अुसमें अिसी तरहके जुल्मोंकी कहानी मिलेगी। जिस किसी सम्प्रदायने साम्प्रदायिक जोशके साथ हुकूमत सँभाली है, अुसके हाथों अक्सर दूसरे सम्प्रदायके लोगोंने जुल्म सहे हैं, और फिर अपने हाथमें हुकूमत आने पर अुलटकर वैसे ही .जुल्म दूसरों पर किये हैं। अिस तरह हमारे देशमें वैदिकों, बौद्धों, जैनों, लिंगायतों, शैवों, वैष्णवों, सिक्खों और अुनके अुप-पन्थोंने अपने-अपने जमानेमें किसी वक़्त .जुल्म सहे हैं, तो दूसरे किसी वक़्त (कभी हुकूमत अुनके हाथमें रही हो तो) दूसरों पर .जुल्म ढाये भी हैं।

यूरोपमें और पच्छिमी अेशियामें भी अैसा ही हुआ है। अीसाअियोंके धर्मयुद्ध, मुसलमानोंके जिहाद, शुरूके जमानेमें यहूदियों और रोमनों द्वारा अीसाअियों पर किये गये .जुल्म, बादमें अीसाअियोंके हाथों यहूदियों पर हुअे .जुल्म, और जिस अीसाअी पन्थके हाथमें हुकूमतकी पूरी बागडोर हो, अुसके हाथों दूसरे अीसाअी पन्थों या फ़िरक़ों पर हुअे हैवानियतभरे जुल्म, क़रीब-क़रीब अीसाअी धर्मके पैदा होनेके जमानेसे हमारे जमाने तक होते रहे हैं। हज़ारों लोग अिन साम्प्रदायिक अत्याचारोंसे घबराकर अिंग्लैण्ड, हॉलैण्ड और अमेरिका वग़ैरा मुल्कोंमें जाकर बस गये हैं। रूसमें अीसाअी धर्मको दबा देनेके लिअे बोल्शेविक सरकारकी तरफ़से अिसी तरहके जुल्म अिसी सदीमें हुअे हैं। यूरोपका सारा अितिहास अैसी बातोंसे भरा पड़ा है। धर्मके नाम पर पैदा हुअी यह पैशाचिकता अैसी है कि अिसका बयान पढ़ते-पढ़ते .खून खुश्क हो जाता है। चीन और जापानकी तवारीख़में भी अैसी बातें पाअी जाती हैं।

जब किसी राज्य या हुकूमत ने सभी धार्मिक मतों और पन्थोंसे परे रहकर राजकाजी मामलोंमें अिस बातका ख़याल नहीं किया है कि अुसकी रिआया किस मत, पन्थ या फ़िरकेको माननेवाली है, और जब अुसने सभी सरकारी हाकिमोंके लिअे मज़हबी मामलोंमें बिलकुल निष्पक्ष रहनेका फ़रमान जारी किया है, तभी रैयतको अपना दिल-पसन्द धर्म या मज़हब माननेकी आज़ादी मिली है, और जनता भी अलग-अलग पन्थों या फ़िरक़ोंके प्रति सहिष्णु बनना सीखी है।

तरह-तरहकी यातनायें सहकर और कठोर अनुभवोंमेंसे गुज़रकर हिन्दुस्तानके धार्मिक पन्थोंने आम तौर पर दूसरोंके मतको सह लेनेका गुण सीखा है। शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध, अेकेश्वर पूजा, विविध देवपूजा, भूतपूजा और निरी नास्तिकता तक अेक-दूसरेके विरोधी-से मालूम होनेवाले कअी पन्थोंके रहते भी, अगर अिन सबको हिन्दू-धर्मका नाम देना मुनासिब है, तो वह अिसी वजहसे कि अिन सबमें जो अेक सामान्य गुण पाया जाता है, वह है अिनकी धार्मिक सहिष्णुता।

अिस गुणकी तहमें रही हुअी सचाअी भारतवर्षको अीशुके भी जन्मसे पहले पहली बार सूझ चुकी थी। अलबत्ता, आम लोगोंके दिलोंमें जड़ जमानेके लिअे अुसे कुछ सदियाँ ज़्यादा लगी थीं। फिर भी अैसा मालूम होता है कि मुसलमानोंके अिस देशमें पहली बार आनेसे पहले यह गुण यहाँ ठीक-ठीक थिर हो चुका होगा। सम्राट् अशोकने अिस सचाअीको अच्छी तरह पहचाना था। वह खुद बौद्ध था, बौद्धधर्ममें गहरी श्रद्धा रखता था, और बड़े अुत्साहके साथ अुसे सारी दुनियामें फैलाना चाहता था। पं० जवाहरलाल नेहरू अपनी 'डिस्कवरी ऑव् अिण्डिया' में लिखते हैं—

> "अुसके दूत और वकील सीरिया, अीजिप्ट, मैसीडोनिया, सीरीन, और अेपिरस तक पहुँचे थे, और अुन्होंने वहाँ अुसकी शुभेच्छा और बुद्धका सन्देश पहुँचाया था। वे लोग मध्य अेशिया, बरमा और स्याममें भी गये थे। लंकामें तो अुसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्राको ही भेजा था। हर जगह बुद्धि और हृदयसे ही अपील की गअी थी; कहीं धमकी या जबरदस्ती न थी। .खुद श्रद्धालु बौद्ध होते हुअे भी दूसरे मत, पन्थ या फ़िरक़ोंके लिअे अुसके दिलमें अिज़्ज़त और क़द्र थी। अपने अेक शिलालेखमें अुसने अैलान किया है कि 'सभी पन्थ किसी न किसी कारणसे आदरके योग्य हैं'। अिसी तरह मनुष्य अपने पन्थको अूपर अुठाता है, और साथ ही दूसरे पन्थवालोंकी भी सेवा करता है।"

हिन्दुस्तान पर हमला करनेवाले शुरूके मुसलमान, तजरबेकारके बजाय जुनूनी ज़्यादा थे, अिसलिअे वे हुकूमतकी मददसे धर्मका प्रचार करनेके तरीक़ेसे ही चिपटे रहे। लेकिन जैसे-जैसे वे थिर होते गये, वैसे-वैसे अुनकी समझ पक्की होती गअी, अुनकी दानाअी बढ़ती गअी। लेकिन राज्यको और राज्यके सेवकोंको धर्म-सम्प्रदायसे परे रखनेका सबक़ अभी अुनके दिलोंमें पक्का भी नहीं हो पाया था कि अितनेमें अुनकी हुकूमत ही खत्म हो गअी। अिसकी वजहसे हुकूमतके ज़रिये अपने धर्मको पोसनेके लालचका बीज अुनमें बना रहा, चुनाँचे अब हिन्दुस्तानमें मुसलमानोंकी बस्तीवाला और मुसलमानोंकी ही हुकूमतवाला अेक मुस्लिम राज्य क़ायम करनेकी महत्त्वाकांक्षाके

www.vinoba.in

मुस्लिम लीगी नेताओंके दिलों पर क़ब्ज़ा कर लिया है। और अिस तरह अेक बार फिर फ़िरक़ा-परस्त हुकूमतका ज़हर हिन्दुस्तानकी जनतामें फैला है। बंगालमें मुस्लिम लीगके हाथमें थोड़ी हुकूमत आअी है। वह अभी पूरी तरह मज़बूत या पक्की भी नहीं हो पाअी है, तहाँ तो हमें अिस बातका अेक पदार्थपाठ मिल गया कि साम्प्रदायिक हुकूमत अपनी रैयत पर कैसा और कितना कहर बरपा कर सकती है।

हिन्दू भी यह कहकर बच नहीं सकते कि बिहारमें या दूसरे सूबोंमें अुनकी तरफ़से जो हैवानियतभरे ज़ुल्म हुअे, वे शुरूमें मुसलमानोंके हाथों हुअी ज़्यादतियोंका जवाबभर माने जायँ। साम्प्रदायिक हुकूमतके अनर्थोंका अुन्हें बहुत तजरबा है। जवाबमें वैसी ही दूसरी साम्प्रदायिक हुकूमत क़ायम करके हम अिन अनर्थोंको मिटा नहीं सकते। अखण्ड या खण्डित हिन्दुस्तान,—यानी हिन्दूधर्म और हिन्दू-संस्कृतिके पोषणका बीड़ा अुठानेवाली हुकूमत—पाकिस्तान—यानी मुस्लिम धर्म और संस्कृतिको अपनानेवाली हुकूमत—की महत्त्वाकांक्षाका कोअी अुचित या मुनासिब जवाब नहीं। अिन दोनों धर्मोंको, और अिसी तरह सिक्ख, ख्रिस्ती और जरथोस्ती व दूसरे सब धर्मोंको भी दूधमें शकरकी तरह अेक-दूसरेके साथ घुलमिलकर अेक सामान्य राष्ट्रीय—बल्कि मानव—संस्कृति पैदा करनी चाहिये—यही अिसका अिलाज है। अेक-दूसरेसे अलग होने या अेकके दूसरेको निकाल भगाने या मिटा डालनेका ख़याल ग़लत और दुष्टतापूर्ण है।

वापी, २७-११-'४६

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल घ० मशरूवाला

## खादीका सन्देश

यह है खादीका सन्देश।

खेती, खादी, ग्रामोद्योग और गोपालनके मामलोंमें हमारे घर और गाँव स्वावलम्बी बन जायँ, और हम अिनमें जरूरतसे ज़्यादा परस्परावलम्बन दाखिल न करें, और जरूरी परस्परावलम्बन और सहयोग न टालें, तो क़ुदरती तौर पर अैसा समाज स्वावलम्बी, स्वयंपूर्ण और स्वतंत्र बने बिना न रहे। चूँकि अैसे समाजमें आपसी होड़ाहोड़ी कम-से-कम होगी, अिसलिअे अुसमें आपसका समभाव ज़्यादा-से-ज़्यादा रहेगा और बढ़ेगा। अैसे समाजको ही हम अहिंसक समाज कहते हैं।

मनुष्य-जातिके ठीक बचपनके दिनोंमें शायद अैसे समाजकी स्थापना नहीं हो सकती। लेकिन अपनी तन्दुरुस्त जवानीके दिनोंमें तो मनुष्योंके समाजको क़ुदरती तौर पर अहिंसक बनना ही चाहिये। अगर ज्ञान, विज्ञान और कला-कौशलके विकासके साथ समाज जाग्रत और तेजस्वी बना रहे, तो अुसे सहज ही यह सूझ जाय कि अहिंसा ही मनुष्यके जीवनका धर्म है। लेकिन जब तक यह ज्ञान भोला है, तब तक यह सुरक्षित या सलामत नहीं। जीवनका कड़ुआ-मीठा अनुभव मिलनेके बाद ही मनुष्यको भले-बुरेका साफ़-साफ़ ख़याल होता है। और, अिस ख़यालके बाद अुसके मनमें जो अहिंसा होगी, वही लम्बे वक़्त तक क़ायम रहेगी। अगर पिछले पाँच-दस हज़ार बरसके अनुभवके बाद भी मनुष्य-जाति अहिंसाकी ओर न बढ़ी, तो अिसमें शक नहीं कि वह मिटकर ही रहेगी।

अहिंसा कोअी अैसी वृत्ति या जहनियत नहीं, जो कोरे धर्मोपदेशसे अपने-आप मनमें बस जाय। अहिंसाकी स्थापनाके लिअे तो मनुष्यको अेक खास तरहका तन्दुरुस्त जीवन बितानेकी कला सीखनी चाहिये, अेक खास तरहकी समाज-व्यवस्था क़ायम रखनी चाहिये, और अिसके लिअे मनुष्यको अेक खास तरहकी जीवन-दृष्टि अपनानी चाहिये।

दुनियामें आज जिस तरहकी सरकारें क़ायम हैं, वे सरकारें अहिंसक समाजमें शामिल नहीं हो सकतीं। अिन सब सरकारोंका जीवन-दर्शन नास्तिकतापूर्ण होता है। अिनका आखिरी विश्वास मनुष्यकी अूँची वृत्तियोंपर नहीं रहता, बल्कि सजा, जबरदस्ती, अिनाम, और अिज़्ज़तके ज़रिये प्रकट होनेवाली डर, लालच और अहंकार या खुदीकी तीन हलकी वृत्तियों पर रहता है। अिनसानके लिअे यह अेक निहायत शर्मकी बात है कि अुसे अैसी सरकारोंको मंज़ूर करना पड़ता है। लेकिन अिनसान करे क्या? अेक बार बनावटी ज़िन्दगी, बनावटी आदर्श और बनावटी जहनियत पैदा करने और समाजी ज़िन्दगीको बीमार बनानेके बाद अिनसान नक़ली सरकारें क़ायम करके अुन्हें चलाये नहीं, तो और क्या करे? कहाँ जाय?

खुजलीके बीमारको अपना बदन खुजलानेमें बहुत सुख मिलता है। लेकिन अिसीलिअे कोअी यह न कहेगा कि खुजली बीमारी नहीं, बल्कि जीवनकी अेक सिद्धि है। अिसी तरह चूँकि आजकलकी संस्कृति या तहज़ीबके ज़रिये अिनसानकी कुछ हवसें पूरी होती हैं, महज़ अिसलिअे यह साबित नहीं होता कि यह संस्कृति रोगी संस्कृति नहीं।

जो आदमी वासनाओं या हवसोंसे घिरा हुआ है, वह सिर्फ़ ठोस दलीलोंसे भी कोअी चीज़ मंज़ूर नहीं करता। अेडवर्ड कारपेण्टर-जैसोंने अिस मज़मून पर अेक बढ़िया किताब लिखी कि आजकलकी संस्कृति या तहज़ीबका मर्ज़ किस तरह पैदा होता है, और अुसे मिटानेके तरीक़े या अिलाज क्या हैं। लेकिन अुसे पढ़कर समाज अपनी ज़िन्दगीका रवैया बदलनेको तैयार न हुआ। अेकके बाद अेक जो दो विश्वव्यापी लड़ाअियाँ हुअीं, अुनकी वजहसे मनुष्य-जाति अपनी बरबादीके किनारे आ पहुँची है। अैसे समय, अिस अुम्मीदसे, कि जिस हिन्दुस्तानकी नसोंमें आत्मपरायण संस्कृतिकी विरासत सोअी हुअी हालतमें मौजूद है, वह हिन्दुस्तान खुद बरबादीसे बचकर सारी दुनियाको बरबाद होनेसे बचा सकेगा, हम अपने जीवनको स्वावलम्बी, स्वाश्रयी और स्वयंपूर्ण बनानेकी कोशिशमें लगे हैं।

जब हम अपने जीवनको बिलकुल साफ़-पाक बना लेंगे, तभी हम मनुष्यकी प्रतिष्ठाको शोभा देने-जैसी संस्कारी और सच्चे मानों में सुधरी हुअी हुकूमत क़ायम कर सकेंगे।

अगर हम अन्यायका सामना हमेशा फ़ौज, पुलिस, अदालत और आपसी मार-काटके ज़रिये ही करते रहेंगे, तो अिस तरहकी सरकार चलानेके लिअे हमें अुसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ेगी, और वह क़ीमत तभी चुकाअी जा सकेगी, जब हम हिंसाप्रधान, भोगैश्वर्य-परायण और द्रोहमूलक समाजको यानी अैसे समाजको जगह देंगे, जो मार-काट, अैश-व-अिशरत और लूट-खसोट पर जीना चाहता हो।

आअिन्दा जमानेके समूचे समाज-शास्त्रका मूलमंत्र यह है—ज़िन्दगी बिताना स्वावलम्बनसे, और अुसे टिकाये रखना सत्याग्रहके बलसे।

सत्याग्रहमें सिर्फ़ अन्याय करनेवाले आदमीका और अुसके अन्यायका नहीं, बल्कि अन्यायी आदमीकी अन्यायपूर्ण वृत्तिका ही विरोध मुख्य है। अिस तरह हरअेक सत्याग्रहके साथ समाजकी हलकी या हीन वृत्तियाँ कम होती जाती हैं, और राज्य-व्यवस्थाका लोप होता जाता है। यानी राज्य-व्यवस्थामेंसे व्यवस्थावाला हिस्सा क़ायम रहता है, और राज्यवाला हिस्सा गायब हो जाता है। अगर मनुष्य-समाजने अितनी तरक़्क़ी न की, तो वह टिक न सकेगा। दुनियामें विज्ञान या सायन्सका अितना फैलाव हुआ, माल लाने-ले जानेकी अितनी सहूलियतें पैदा हुअीं, सारी दुनिया पर आर्थिक व्यवस्थाका जाल फैल गया, फिर भी आज दुनियाके क़रीब-क़रीब सभी देश नाज और कपड़ेके लिअे मुहताज बने हैं। जिस तहज़ीबकी वजहसे यह अटपटी हालत पैदा हुअी है, अुसे सुधारना ही होगा। यह सुधार स्वावलम्बन, स्वयंपूर्णता और सत्याग्रहके ज़रिये ही हो है, और खादी अिन सबकी निशानी है।

जब हम अिसे समझकर खादीको अपनायेंगे, तभी हमें, यानी हममेंसे हरअेक मनुष्यको, जीवनकी शान्ति प्राप्त होगी।

(गुजरातीसे) काका कालेलकर

www.vinoba.in

# खादी-कामका विकेन्द्रीकरण

आगाखान महलसे बाहर आनेके बाद फ़ौरन ही जब गांधीजीने चरखा-संघके सामने खादी-काममें क्रान्तिकारी फेरफार करनेवाली योजना (स्कीम) पेश की — जो 'चरखा-संघके नवसंस्करण' के नामसे पहचानी जाती है — तबसे खादी-कामके विकेन्द्रीकरणकी बात भी खादी कार्यकर्त्ताओंमें चल रही है। लेकिन जुदा-जुदा कार्यकर्त्ता अुसका जुदा-जुदा मतलब करते पाये जाते हैं। अपने अूपर चरखा-संघका नियंत्रण न रहे, और खादी पहननेवालोंसे ही सूत कतवाया जा सके, अमुक क़ीमतकी सूतकी गुण्डी लेकर ही खादी बेची जा सके, वगैरा चरखा-संघके नियमोंसे छुटकारा पानेके लिअे भी कअी लोग विकेन्द्रीकरणका यानी चरखा-संघसे स्वतंत्र होनेका विचार करते हैं। लेकिन अुन्हें यह समझ लेना चाहिये कि आज जिस ढंगसे खादी-काम चल रहा है, अुससे पीछे हटनेके लिअे नहीं, वरन् अुसे आगे बढ़ानेके लिअे ही विकेन्द्रीकरणकी बात पेश की गअी है। विकेन्द्रीकरणकी योजनाका न यह हेतु है, न हो सकता है, कि जो लोग अेक अरसेसे खादी पहनते रहे हैं, मगर ख़ुद कातनेको तैयार नहीं हैं, अुनके लिअे आसानीसे खादी मुहैया करनेका तरीक़ा ढूँढ़ा जाय।

विधान या आअीन बनानेवाली सभामें स्वराजका विधान बने, और वह अमलमें लाया जाय, तो अुससे हमें राजकाजी आजादी मिलेगी। अंग्रेज़ी राजके जुअेसे हम छूटेंगे, लेकिन हमें तो अिस स्वराज और अिस आजादीसे ज़्यादा व्यापक स्वराज और ज़्यादा सच्ची आज़ादीकी रचना करनी है। विकेन्द्रीकरणकी बात खादीके ज़रिये अैसे स्वराजकी रचना करनेके लिअे की जाती है, जिसमें राजकाजी ज़ुल्म ही नहीं, बल्कि अुनसे आगे बढ़कर माली या समाजी अन्याय या ज़ुल्म भी न हों, जिसमें कोअी किसीको लूट-खसोट न सके, जिसमें अूँच-नीचका भेदभाव न हो, जिसमें किसी भी शख़्सको कंगालियत, बेकारी या लाचारी महसूस न करनी पड़े, जिसमें हरअेक शख़्स अपनी हिफ़ाजत आप करनेकी हिम्मत सीख सके, और जिसमें हरअेक शख़्स हमारे मुल्ककी तहज़ीब या संस्कृतिकी विरासतसे फ़ायदा अुठाने लायक़ ताक़त हासिल कर सके।

चूँकि हमारा देश गाँवोंमें बसा है, अिसलिअे अैसे व्यापक स्वराजकी अिमारत अुन स्वराज भोगनेवाले गाँवोंकी नींव पर ही खड़ी हो सकेगी, जो आर्थिक या माली दृष्टिसे स्वावलम्बी, अपनी प्रारम्भिक ज़रूरतोंके बारेमें स्वयंपूर्ण और देहातकी ज़िन्दगीके लिअे ज़रूरी दूसरे सभी मामलोंमें स्व-शासित होंगे। खादी अैसे ग्राम-स्वराजका प्रतीक या निशानी है, या अैसे ग्राम-स्वराजकी रचनाकी शुरूआत है।

अगर अिस तरह खादीका विचार किया जाय, तो हरअेक गाँवको कपड़ेकी अपनी ज़रूरतके बारेमें स्वावलम्बी बनाना, खादी-कामका सच्चा विकेन्द्रीकरण कहा जायगा। गाँवमें कपास अुगानेसे लेकर सूत कातने तकके सारे काम क़रीब-क़रीब हरअेक घरमें किये जायँ (हमारे मुल्कके कुछ हिस्से अैसे हैं — हालाँकि वे बहुत थोड़े और छोटे हैं — जहाँ कपास पैदा नहीं होती; अैसे हिस्सोंका सवाल निराला है), गाँवके जुलाहोंसे ही वह सूत बुनवा लिया जाय, और अगर गाँवमें जुलाहे न हों, तो गाँवके कुछ नौजवान भाअी-बहन बुनाअीका काम सीख लें, और अिस तरह पूरा गाँव वस्त्र-स्वावलम्बी बन जाय। ग्राम-सेवकों और खादीकार्यकर्त्ताओंको अिस दृष्टिसे काम करना चाहिये। अिस तरह अेक गाँव लेकर या कुछ गाँवोंके अेक समूहको अिकाअी मानकर काम शुरू किया जा सकता है। बेचनेके लिअे खादी तैयार करनेमें पूँजी लगानेकी जो ज़रूरत पड़ती है, वह अिस ढंगसे काम शुरू करनेमें नहीं पड़ेगी। फिर भी काम शुरू करनेके लिअे जो थोड़े-बहुत पैसोंकी ज़रूरत होगी, वे गाँवमेंसे ही प्राप्त कर लेने चाहियें। अिन पैसोंके अिस्तेमालके लिअे और लोगोंको खादीकी सब क्रियायें सिखानेका अिन्तज़ाम करनेके लिअे मुक़ामी कार्यकर्त्ता अपना अेक मण्डल बना लें। साथ ही गाँवके मदरसेकी मारफ़त भी खादी-कामकी शुरूआत हो सकती है। अैसे मंडलोंको अपने-अपने हलक़ोंमें रहनेवाले परिवारोंको वस्त्रस्वावलम्बी बनानेका मक़सद सामने रखकर काम करना चाहिये। जो परिवार अपनी ज़रूरतसे ज़्यादा सूत कातता हो, अुसके सूतका कपड़ा, अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ न कात सकनेवाले परिवारको दिया जा सकता है। लेकिन जहाँ तक बने अपने तय किये हुअे हलक़ेसे बाहर खादी भेजनेका विचार नहीं रखना चाहिये। अिसी तरह बाहरसे मिलका कपड़ा हरगिज़ न लाना चाहिये, और खादी भी जहाँ तक बने बाहरसे नहीं लाअी जानी चाहिये। चरखा, करघा वग़ैरा जिन चीज़ोंकी ज़रूरत हो, वे भी गाँवकी गाँवहीमें बना ली जायँ, तो सबसे अच्छा। अेक तय किये हुअे हलक़ेमें — फिर वह गाँव हो, ताल्लुक़ा हो, ज़िला हो, या सूबा हो, अगरचे ज़िलेसे ज़्यादा बड़ा हलक़ा अैसे कामके लिअे कम अनुकूल होगा — काम करनेके लिअे बना हुआ मण्डल अूपर बताये मुताबिक़ काम करना शुरू करे, तो वही सच्चा विकेन्द्रीकरण होगा। काम करनेके लिअे ज़रूरी पैसोंके वास्ते चरखा-संघके सदर-दफ़्तरकी तरफ़ ताकनेके बजाय, अपनी ताक़त और अपने वसीलेसे ही गाँववालोंकी मददसे पैसे अिकट्ठे कर लेना, विकेन्द्रीकरणकी योजनाका अेक अहम हिस्सा है। अैसा करनेसे काम करनेवालोंका आत्मविश्वास बढ़ता है, और लोग भी समझने लगते हैं कि यह हमारा ही काम है।

अिसका यह मतलब नहीं कि चरखा-संघ किसी तरहकी मदद न करे। अब तक के खादी-कामके अपने अनुभवकी बिना पर चरखा-संघकी तरफ़से निष्णातों या माहिरोंकी सलाह तो मिलती ही रहे। अिसके सिवा शुरूमें बढ़ावा देनेके लिअे, किये हुअे काम पर, चरखा-संघकी तरफ़से कुछ-न-कुछ मदद भी दी जाय। मसलन्, आजकल जितनी स्वावलम्बी खादी तैयार होती है, अुसपर दो आना फ़ी चौरस गजके हिसाबसे चरखा-संघ मदद देता है, और कोअी संस्था या मंडल नया बुनकर तैयार करता है, तो अिस कामके लिअे अुसे चरखा-संघकी तरफ़से सौ रुपयोंकी मदद मिलती है। जब तक चरखा-संघके पास फ़ण्ड रहे, तब तक अैसी मदद बराबर दी जाय। साथ ही, अगर किसीको खादीकी सब क्रियाओंकी पक्की जानकारी हासिल करनी हो, तो अुसे ज़रूरी तालीम देनेका काम भी चरखा-संघ तरफ़से ही होता रहे। मगर अेक बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि चरखा-संघकी तरफ़से मिलनेवाली सारी मददों का स्वागत करते हुअे भी, अुसकी मदद पर ही सारा दारमदार रखकर कोअी काम शुरू न किया जाय। जब रचनात्मक काम करनेवाले छोटे-छोटे मण्डल अपना काम स्वावलम्बनके तरीक़े पर चलाने लगेंगे, तभी वे सच्चे स्वराजकी नींव डाल सकेंगे। रचनात्मक कामका मक़सद यह है कि अुसकी मददसे लोग आज़ादीका अुपभोग करनेकी अपनी ताक़त बढ़ायें। और, लोगोंकी ताक़त तभी बढ़ेगी, जब कामका विकेन्द्रीकरण होगा, और लोग अपने काम ख़ुद करने लगेंगे।

साबरमती, २७-११-'४६
(गुजरातीसे)

नरहरि परीख

---

## हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षाअें

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धाकी ओरसे ली जानेवाली हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षाअें ता० १६ फरवरी, १९४७ रविवारको होंगी। अिन परीक्षाओंमें शामिल होनेकी अर्ज़ियाँ, केन्द्रोंके ज़रिये, वर्धाके दफ़्तरमें, ता० १५ जनवरी, १९४७ तक फ़ीसके साथ पहुँच जानी चाहियें।

केन्द्र खोलनेके नियम, परीक्षाओंके नियम, परिक्षाओंकी पुस्तकें, वग़ैराकी जानकारी वर्धाके दफ़्तरसे मिलेगी।

अमृतलाल नाणावटी
परीक्षामंत्री,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

www.vinoba.in

## दक्खिनी अफ्रीकाके अेक जेलकी तसवीर

"२३ दिन बाद मैं जेलसे छूटा। ७ दिनकी छूट मिली। २२ दिनमें खासी परीक्षा हो गअी। २० पौण्ड वजन कम हुआ। जेलकी कोअी चीज़ माफ़िक़ आने लायक़ न थी। सफ़ाअीको तो वहाँ तिलांजलि ही देनी पड़ी। अच्छे-जूठेका भी वहाँ कोअी सवाल न था — हो ही नहीं सकता। १८ आदमियोंकी कोठरीके अेक कोनेमें खुला पाखाना था। खुशक़िस्मतीसे पाखाना सेप्टिक टैंकका था। फिर भी अुसमें बेपरदा होकर बैठना पड़ता था। .... पीनेके पानीकी अेक बालटी थी, और साथमें अेक प्याला था। सब अुसीको डुबा-डुबाकर पानी लेते, और मुँह लगाकर अुसीसे पानी पीते। ... शामके साढ़ेचार या पाँचसे सुबहके पाँच तक मुझे पाखानेकी हाजत न मालूम हो, और प्यास न लगे, अिसके लिअे मुझे अपने खाने-पीनेके वक़्तमें ज़रूरी फेरफार कर लेना पड़ा। अिसकी वजहसे, यह समझिये कि २२ दिन लगभग अुपवास-जैसे ही बीते। .... बरतन टीनके, जंग खाये हुअे और गन्दे। खुराक भी वैसी ही। सुबह मक्कीके आटेकी बिलकुल ठण्डी काँजी। दोपहरको बारह बजे फिर वही सुबह पकाअी हुअी काँजी। शामको मक्कीके आटेमें थोड़ा पानी मिलाकर और अुसे जैसे-तैसे सेंककर बनाया हुआ बिलकुल सूखा चूरा; चूरेके साथ 'काअु-पीज़' नामके अेक क़िस्मके दाने, सो भी सूखे, और चार औंस डबल रोटी। नेटिव लोगोंको (दक्खिनी अफ्रीकाके असली बाशिन्दोंको) १२ बजे अुबाली हुअी मक्की दी जाती है। .... दो दिन मुझे बाहर सख़्त मज़दूरीके लिअे भेजा गया। हट्टे-कट्टे नेटिवोंसे जितना काम लिया जाता था, अुतना ही हमारे लोगोंसे भी। चीफ वार्डरसे शिकायत की। .... अिससे मुझे हलकी मज़दूरी दी गअी। .... हलकी मज़दूरीमें नीचे लिखे काम लिये जाते हैं — सब कोठरियोंसे बिछौने निकालना, कोठरियाँ धोना, बाहरका बड़ा यार्ड धोना, नीचे झुककर पानी अुलीचना, और ९ से १२ तक तेज़ धूपमें बैठकर बरतन मलना। (दक्खिनी अफ्रीकामें अिन दिनों गरमी रहती है।) .... दोपहरको छाँह मिलती थी, अिसलिअे अुतनी तकलीफ़ नहीं होती थी। पहले दिन वॉर्डरोंका खासा रोब रहा। अुन्होंने मुझे धमकाया और कहा, 'यहाँ कोअी 'रिंग लीडर' (अगुआ) नहीं बन सकता। सब अेकसे समझे जायँगे, और ज़्यादा तीन-पाँचकी, तो हड्डी-हड्डी तोड़ दी जायगी। तुझे चेताये देता हूँ, मेरा दिमाग़ न चाटना'। अुसने सिर्फ़ हाथ चलाना बाक़ी रक्खा था। अितनेमें दूसरे दिन मैंने खुराककी शिकायत की और कहा कि चीफके पास ले चलो। अिसपर गालियोंकी बौछारके साथ वॉर्डर बोला — "चीफके पास जाना है? चल, चीफके पास ले जाता हूँ।" कहकर मेरी गरदन पकड़ी और धक्का मारकर चीफके पास ले गया। मैंने चीफसे पूछा — "क्या अिन वॉर्डरोंको हमपर हाथ चलानेका हक़ है?!" चीफने कहा — "अिन्हें साफ़ तौर पर यह हिदायत दे दी गअी है कि किसी पर हाथ न चलायें।" अुसके बाद हाथ चलाना बन्द हुआ। .... आठ दिन तक तो मुँह धोनेके लिअे कुछ भी न दिया गया। आठ दिन बाद मुझे टूथ ब्रश और टूथ पाअुडर दिया गया। मैंने कहा, जब तक सबको यह सहूलियत नहीं दी जाती, तब तक मैं अिसका अिस्तेमाल नहीं कर सकता। जवाब मिला — "सबको नमक दिया जायगा।" मैंने पूछा — "कबसे?" तो कहा — "शामसे।" अिसके बाद पाँच दिन और बीत गये। फिर अेक दिन अचानक नमकके दर्शन हुअे। .... अेक आनन्दकी बात यह थी कि जेलमें हम सब मिलकर सुबह-शाम प्रार्थना करते थे ...."

www.vinoba.in

जिन्हें हिन्दुस्तानके जेलखानोंका तजरबा है, अुन्हें अिस तसवीरमें कोअी नयापन नहीं मालूम होगा। लेकिन जेलके अिन्तज़ाम और अुसके पीछे काम करनेवाले दृष्टिकोणका यह चित्र अेक अैसे देशका है, जो अपने लिअे ज़्यादा अूँची सभ्यताका दावा करता है और अिस अँदेशेसे कि कहीं असभ्य हिन्दुस्तानी और अेशियाअी अुसकी सभ्यताको नीचे न गिरा दें, अुन्हें अपनेसे दूर रखनेका आग्रह रखता है।

वापी, ४-१२-'४६ (गुजरातीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

## क्या आत्महत्याकी सलाह दी जा सकती है?

गांधीजीको लिखे गये अेक भाअीके खतसे अुनकी खास-खास बातोंका सार अुन्हींके शब्दोंमें नीचे दिया जाता है —

"२७ अक्तूबर, १९४६के 'हरिजनबन्धु'में आपकी यह सम्मति प्रकट हुअी है कि स्त्रियोंको अुनके शीलके भ्रष्ट होनेसे पहले आत्महत्याका मार्ग अपनाना चाहिये। लेकिन मेरी नम्र किन्तु दृढ़ रायमें आपका यह अुपदेश आध्यात्मिक हेतुके विरुद्ध है।

"हम जीवन और जीवन-कलाकी खोजमें निकले हैं। मृत्यु और मृत्यु-कलाकी खोजमें हरगिज़ नहीं। संस्कृतिहीन मनुष्य पशुसे भी भयंकर और बदतर है। जिस समय यह पाशवी बुद्धिका मनुष्य मृत्युकी और मृत्यु-कलाकी खोजमें लगा हो, अुसीका विचार करता हो, और वैसा ही बरताव कर रहा हो, अुस समय संस्कारी पुरुष सदुपाय, सत्प्रयत्न और सद्व्यवहार द्वारा अुसका प्रतीकार करनेके बदले खुद ही घबरा जायँ और लाचार बनकर दूसरे ढंगसे वैसे ही अुपायों और प्रयत्नोंमें लग जायँ, तो मनुष्यताके और सारी मनुष्य-जातिके लिअे वह बहुत ही लज्जाकी बात मानी जायगी।

"अिसमें शक नहीं कि देहके साथ की जानेवाली ज़बरदस्तीके बारेमें अपनी लाचारी या फ़र्ज़के मुतअल्लिक़ स्त्री या पुरुषकी असहायता या निरुपायता दुःख देनेवाली चीज़ है, लेकिन अिसकी वजहसे अैसे स्त्री-पुरुषके साथ किये गये पाशवी, अपमानजनक, अत्याचारी और बलात्कारी बरतावके कारण, अुन्हें आत्मजीवनसे भ्रष्ट मानने या सामाजिक जीवनसे नीचे गिरानेकी कार्रवाअी ही असलमें अमानुषी है। जो मनुष्य-जाति पशुओंसे अलग, अपने खास ढंगका जीवन बिताती है, अुसके लिअे अिन दोनों प्रकारोंमें मंज़ूर किया गया अपवित्रताका कलंक दुर्बल और अज्ञान मनोदशाका सूचक परिणाम है।

"धर्म-संकटके अवसरपर तुरत किसी सद्अुपाय या सहायताके अभावमें मनुष्यकी लाचारी या बेकारीको कायरता कहना, या विकारी मनोदशासे रहित ज़बरदस्तीके संभोगको या अनिच्छित, अपमानित और अत्याचारी प्रसंगको, असंयमी भ्रष्टता या निर्लज्ज व्यभिचारके जैसी शीलहीनता समझना, मरेको मारनेके समान दोहरी मार है।

"सत्य, अहिंसा और धर्मके मामलोंमें आत्महत्याकी गुंजाअिश ही नहीं। लेकिन अज्ञानता या बे-समझीमें आत्महत्याकी गुंजाअिश है। कष्टों, यातनाओं, वेदनाओं, और शारीरिक तकलीफ़ोंका अभाव पैदा करनेके लिअे की गअी आत्महत्याको किसी भी हालतमें बलिदान माना या मनवाया नहीं जा सकता। अैसी मौत तो कायरकी मौत ही कही जायगी। शारीरिक तकलीफ़ों, यातनाओं, वेदनाओं और कष्टोंको सहते-सहते सत्य और अहिंसाके आदर्शसे अेकरूप होकर या अुसके अनुरूप बनकर मिलनेवाली मौत ही धार्मिक बलिदान-रूप मानी या मनवाअी जा सकती है।

"राजकाजी मामलोंमें सत्य और अहिंसा आपकी आजकलकी धारणाके अनुसार अुपयुक्त साधन बन या रह नहीं सकते, लेकिन सामाजिक जीवनमें सद्गुणोंकी तरह रहनेवाले ये आदर्श मनुष्य-जातिके ध्येयरूप राजकाजमें लोकजीवनके राजनीतिक आदर्श बन सकते हैं।

"मनुष्य-जातिके, मनुष्य-मनुष्यके आपसी व्यवहारके लिअे स्वेच्छासे स्वीकार किये और बनाये हुअे, नियमों और क़ानूनोंको मनुष्य .खुद ही तोड़ता नज़र आये, और अिसके बारेमें संस्कारी पुरुषोंकी अच्छी सिखावन विफल होती दिखाअी पड़े, तो स्वेच्छासे स्वीकार की हुअी और बनाअी हुअी शासन-संस्थाके ज़रिये न्याय और अनुशासन द्वारा अुसे सफल बनानेकी पूरी-पूरी कोशिश करना ही राजनीतिक संस्थाके सामाजिक जीवनका हेतु है। अगर अैसा करनेके बदले राजकाजी और संस्कारी पुरुष अिस तरहके अुपाय खोज निकालेंगे और अुन्हें अपनायेंगे, तो हम संस्कारी जीवनसे बहुत दूर जा पड़ेंगे। और फिर अपनी रची अिस ग़लत भूमिकासे वापस लौटनेका अवकाश या मौक़ा बहुत कम और बहुत दूर रह जायगा।"

गांधीजीको समझनेके लिअे हमें अेक बात ध्यानमें रखनी चाहिये। जिन विचारों पर फ़ौरन अमल करनेका तरीक़ा वे सुझा नहीं सकते, सिर्फ़ तात्त्विक चर्चाके रूपमें अुनका प्रचार करनेकी अुन्हें आदत नहीं।

यह तो वे कह ही चुके हैं कि जिस औरत पर ज़बरदस्ती की जाय, अुसे भ्रष्ट या नापाक नहीं मानना चाहिये।

अुन्होंने यह सलाह भी दी ही है कि स्त्रीको अपनी सारी ताक़त खर्च करके अत्याचारीका सामना करना चाहिये। अिसके लिअे अुन्होंने अहिंसाकी मर्यादा या क़ैद नहीं रक्खी। अैसी ताक़त पैदा करनेके लिअे की जानेवाली कोशिशका अुन्होंने कोअी विरोध नहीं किया है। लेकिन यह तो आगेकी बात हुअी।

जिस औरतमें अपनी हिफ़ाज़त करनेकी ताक़त और तालीम नहीं है, लेकिन जिसे अपनी पवित्रताकी बहुत ज़्यादा फ़िक्र है, और जिसके दिलमें ज़ुल्मकी दहशत पैदा हो गअी है, अुस औरतको आज, अभी क्या सलाह दी जाय? क्या अुसे यह कहा जाय कि अगर तुम्हारी अिच्छाके ख़िलाफ़ तुम पर ज़बरदस्ती की जाय, तो तुम अुससे दुःखी न होना, बल्कि अुसे चुपचाप सह लेना? अिसमें शक नहीं कि सतीत्व अच्छी चीज़ है, लेकिन अुसके लिअे अपनी जान देनेकी ज़रूरत नहीं? नहीं, अुससे तो यही कहा जा सकता है कि अगर तुम मौतका डर छोड़ दोगी, तो तुम्हें अुपाय सूझेंगे। जब तक तुम्हें अपने आस-पासकी हवामें ज़ुल्मों और ज़्यादतियोंके होनेका अँदेशा मालूम हो, तब तक तुम ख़ुदकुशीका भी कोअी-न-कोअी साधन अपने पास रखकर घूमो। अपने शीलकी रक्षा और मौतका डर, ये दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। अिसलिअे जिसे अपना शील या अपनी अिज़्ज़त बचानी हो, अुसे मौतका डर पहले छोड़ना चाहिये। यह कोअी कमज़ोरीकी सीख नहीं, बल्कि कमज़ोरके लिअे भी जो अेक अिलाज मुमकिन है, वही सुझाया गया है। अिसका यह मतलब नहीं कि जो औरत अपनी अिज़्ज़तके लिअे लड़ लेती है, या लड़ते-लड़ते मर जाती है, अुसकी बनिस्बत ख़ुदकुशी करनेवाली औरत ज़्यादा अच्छी है। बल्कि अिसमें अुस औरतकी क़दर ज़रूर की गअी है, जो अपने शीलको जानसे ज़्यादा प्यारा समझती है। और यह ठीक ही है।

अिज़्ज़तके लुट जाने पर भी बहुतसी औरतें अपनी जान नहीं दे सकतीं। बड़े-बड़े सैनिक और नेता भी सत्त्वहानि या बेअिज़्ज़ती सहकर जीते हैं। बेअिज़्ज़तीके पहले या बादमें ख़ुदकुशी कर सकनेवाले स्त्री-पुरुष बिरले ही होते हैं। जो लोग जान नहीं दे सकते और सत्त्वहानि हो जानेके बाद भी जी सकते हैं, अुनके साथ भी हमें शुद्रताका ही बरताव करना चाहिये। जो लोग अुनसे नफ़रत करते हैं, वे अपना ओछापन दिखाते हैं। अिसलिअे ज़्यादतियोंकी शिकार बनी हुअी औरतोंको भ्रष्ट न समझनेकी सलाह दी गअी है।

वापी, २१-११-'४६

(गुजरातीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

## सरकारी रुख़

अेक भाअी यों लिखते हैं—

"पिछले हफ़्ते नअी दिल्लीमें अेक अच्छे वज़नदार रोज़ाना अख़बारके जो डाअिरेक्टर आपसे मिले थे, वे हिन्दुस्तानकी मौजूदा अशान्तिके कारणोंको समझनेके लिअे नीचे लिखा मज़मून पढ़ेंगे तो ठीक होगा।

"वाअिसराय साहब सच्चे दिलसे अपने गुरु अेलनबीके क़दमों पर चल रहे हैं। पढ़नेवालोंकी सहूलियतके ख़यालसे मैं नीचे लिखा हिस्सा देता हूँ—

"मिस्रवालोंको अपने मुल्ककी हुकूमत ख़ुद करनेकी तालीम देनेका जो तरीक़ा या पॉलिसी हमने अपनाअी है, अगर वह सचाअीके साथ अपनाअी गअी है, और अुसका कोअी मतलब है, तो ज़रा-सी मुश्किल पैदा होते ही दस्तन्दाज़ी करना और हुकूमतकी बागडोर अपने हाथमें ले लेना, अेक निकम्मी चीज़ है। वज़ीरों और हाकिमोंको हुकूमत चलाना सीखना हो, अमन-व-अमान क़ायम रखनेके लिअे पुलिसको लायक़ बनाना हो, और ज़रूरतके वक़्त मिस्रकी फ़ौजको अपनी हुकूमतके लिअे मददगार साबित होना हो, तो अुन्हें अपने सामने पेश होनेवाली मुश्किलों और ख़तरोंका मुक़ाबला करना सीखना चाहिये, और बेचैन बनानेवाले या ख़तरनाक मौक़ोंपर ब्रिटिशोंके सहारेकी कोअी अुम्मीद न रखनी चाहिये।" (वेवेलके लिखे अेलनबीके जीवन-चरित्रसे, पृ० ४९-५०)

"अिस फ़िक़रेमें 'मिस्रवालों'की जगह 'हिन्दुस्तानवालों' पढ़ना चाहिये, और फिर अूपर लिखी राजनीतिके लिअे हमें अुन्हें श्रेय देना चाहिये। अिसके बावजूद, हमने देखा है कि पिछले दो हफ़्तोंमें दस्तन्दाज़ी करनेके लिअे हाकिमोंसे कैसी दयाजनक अपीलें की गअी थीं। यह चीज़ आपकी 'थ्योरी'को सबित करती है। लेकिन पूरी तसवीर पेश करनी हो, और तमाम दलीलोंको हमेशाके लिअे चुप करना हो, तो नीचेका फ़िक़रा पढ़नेसे फ़ायदा होगा।

"२० मअी, १९२१को (जब कुछ दंगे हो चुके थे) अपनी माँके नाम लिखे ख़तमें अेलनबीने लिखा था—

'मैं ठीक वक़्तकी राह देख रहा हूँ; क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मिस्रवाले ख़ुद ही अपने सियासी सवालोंको हल कर लें। जब तक यूरापियनोंके जान-माल और अुनके हितोंको ख़तरा नहीं पहुँचता, मैं अपनी फ़ौजके साथ कोअी दख़ल देना नहीं चाहता।'

यह सीधी-सादी और यक़ीन पैदा करनेवाली बात है। मैं अुम्मीद करता हूँ कि आपसे मिलनेके लिअे आये हुअे अख़बारनवीस हिन्दुस्तानपर हुकूमत करनेवाले अपने देशभाअियोंसे कहेंगे कि वे, जैसा कि आपने अेक बार कहा था, हिन्दुस्तानको 'अीश्वरके और अराजकताके हाथमें' छोड़कर चले जायँ। अिसका यही अेक हल है, लेकिन बदक़िस्मतीसे अिस अिलाजको आज़मानेमें हमेशा देर की जाती है! ब्रिटिश फ़ौजोंने अभी तक मिस्र छोड़ा नहीं है। वर्धा, ५-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

**का० का०**

## विषय-सूची


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| तरक़्क़ीकी निशानी | ... गांधीजी | ४२५ |
| सवाल-जवाब | ... किशोरलाल घ० मशरूवाला | ४२५ |
| छुआछूतकी जड़ | ... नरहरि परीख | ४२६ |
| शास्त्रके सहारे हैवानियत! | ... किशोरलाल घ० मशरूवाला | ४२६ |
| धर्ममें राजसत्ता | ... किशोरलाल घ० मशरूवाला | ४२८ |
| खादीका सन्देश | ... काका कालेलकर | ४२९ |
| खादी-कामका विकेन्द्रीकरण | ... नरहरि परीख | ४३० |
| दक्खिनी अफ्रीकाके अेक जेलकी तसवीर | ... किशोरलाल घ० मशरूवाला | ४३१ |
| क्या आत्महत्याकी सलाह दी जा सकती है? | ... किशोरलाल घ० मशरूवाला | ४३१ |
| टिप्पणी | | |
| हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षायें | .... | ४३० |
| सरकारी रुख | ... का० का० | ४३२ |


www.vinoba.in